बदलाव का सफ़र

अक्षय कुमार दीक्षित*

प्रस्तुत लेख एक शिक्षक के वास्तविक अनुभवों और प्रयासों की झलकियाँ दिखाता है। इसमें एक शिक्षक अकेले ही अपने स्कूल के लापरवाही भरे माहौल में बदलाव ला पाने में कैसे सफ़ल हो सका, इसका प्रमुख रूप से उल्लेख किया गया है। यह लेख हमें अहसास कराता है कि खराब स्थितियों में बदलाव के लिए बड़े-बड़े कार्यों के स्थान पर छोटी-छोटी ईमानदार कोशिशों से ज़्यादा अच्छे व सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। इस लेख में विद्यालय तथा उसमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों के सकारात्मक विकास एवं बदलाव को दिखाने का प्रयास किया गया है।

जब मैंने शिक्षण के लिए इस विद्यालय का चुनाव किया तो मुझे अनेक शुभचिंतकों ने सुझाव दिया कि मैं इस विद्यालय में न आऊँ। स्वयं इस स्कूल में पहले से कार्यरत शिक्षकों की सहानुभूतिपूर्ण सलाह थी, "आप जिस तरह मेहनत से पढ़ाना चाहते हैं, वैसा माहौल यहाँ नहीं है। बच्चे पढ़ना नहीं चाहते। शिक्षकों को कुछ नहीं समझते। आप किसी अच्छे स्कूल में चले जाओ।" जितना मुझे इस स्कूल के प्रति आगाह किया गया, उतना ही मेरा निश्चय दृढ़ होता गया कि मुझे इसी विद्यालय में पढ़ाना चाहिए।

जब मैं इस स्कूल में आ गया तब भी मुझे सावधान करने वाले स्वर मुझे सलाह देते रहे, "इस स्कूल में बस अपनी इज्ज़त बचाकर रहो। किसी लड़के को ज़्यादा रोका-टोका तो लड़ने और मरने-मारने पर उतारू हो जाते हैं। गाँव के लोकल लड़के हैं.. इनके माँ-बाप भी कुछ नहीं समझते..." मैंने चुपचाप स्कूल की स्थिति पर गौर करना शुरू किया। जो कुछ मैंने सुना था, उसमें काफ़ी हद तक सच्चाई थी। मेरे सामने ही कई बार शिक्षकों के साथ लड़कों की झड़पें हो चुकी थीं। समयबद्धता के बारे में तो जैसे किसी ने कुछ सुना ही नहीं था। अधिकारिक रूप से प्रार्थना का समय 8 बजे था और पहला पीरियड 8:20 पर शुरू होना चाहिए था। बड़ी कक्षाओं के लिए तो ज़ीरो पीरियड का भी प्रावधान था यानी उन्हें तो पौने आठ बजे

* *शिक्षा सलाहकार,* सी-633, जे.वी.टी.एस. गार्डन, छत्तरपुर एक्सटेंशन. नयी दिल्ली-110074

स्कूल पहुँचकर पढ़ाई शुरू कर देनी चाहिए थी लेकिन वस्तुस्थिति कुछ और ही थी। अधिकतर लड़के अपनी मर्ज़ी से जब चाहे आते और जब चाहे चले जाते। 9 बजे तक उनका आना जारी रहता और पहले पीरियड में अपनी हाजरी लगवाकर मौका मिलते ही वे स्कूल से भाग जाते; या तो मुख्य दरवाज़े से या फिर दीवार फाँदकर। स्कूल से भागने के लिए उन्होंने स्कूल की दीवार भी तोड़ डाली थी और एक दो जगह दीवार के ऊपर की रेलिंग को भी तोड़ रखा था। कई लड़के तो सप्ताह में एक-दो बार ही आते थे। इसका परिणाम यह होता था कि पहले पीरियड के बाद आप किसी भी कक्षा में पढ़ाने जाओ, आपको 10-15 बच्चे ही बैठे मिलते थे। जो बच्चे बैठे मिलते थे, उनमें से भी अधिकतर लड़के पढ़ाई के लिए नहीं बल्कि अपने परिवार के डर या दबाव के कारण बैठे होते थे।

मुझे इस निराशाजनक और खतरनाक स्थिति के कारणों का अच्छी तरह पता था। आपके मस्तिष्क में भी वे कारण ज़रूर उभर रहे होंगे। उनमें से लगभग सभी कारण ऐसे थे जिन पर मेरा बस नहीं था। लेकिन मैंने उन कारणों से हार मानकर स्थिति को आँख बंद करके स्वीकार कर लेने के बजाए उन्हीं परिस्थितियों के बीच में से रास्ता निकालने का निश्चय किया।

उपस्थिति दर्ज करना

सबसे पहले मैंने इस बात पर विचार किया कि अगर इस स्कूल के लड़के स्कूल और पढ़ाई के प्रति इतने लापरवाह हैं तो वे पहले पीरियड में क्यों आ जाते हैं और पहले ही पीरियड के बाद क्यों भाग जाते हैं। मुझे अहसास हुआ कि हाजरी के लिए उनके मन में कुछ गंभीरता का भाव है। शायद उन्हें यह अहसास है कि अगर उनकी हाजरी कम हो जाएगी या वे लगातार अनुपस्थित रहेंगे तो स्कूल से उनका नाम कट सकता है या उन्हें परीक्षा में बैठने से रोका जा सकता है। हाजरी लगाने की ज़िम्मेदारी कक्षा-अध्यापक की होती है जो पहले पीरियड में हाजरी ले लेते हैं।

हाजरी के लिए बच्चों की गंभीरता को देखते हुए मैंने निश्चय किया कि मैं जिस कक्षा का कक्षा-अध्यापक हूँ, सिर्फ़ उस कक्षा में ही नहीं बल्कि प्रत्येक उस कक्षा में हाजरी लिया करूँगा जिसमें मेरा पीरियड है। ऐसा कोई अधिकारिक नियम इस स्कूल में नहीं था कि प्रत्येक शिक्षक प्रत्येक पीरियड में हाजरी ले। लेकिन मुझे इसकी ज़रुरत महसूस हो रही थी। इसके लिए मैंने एक उपस्थिति रजिस्टर बाज़ार से खरीद लिया जिसकी कीमत 40-50 रुपए थी। मैंने अपने प्रत्येक पीरियड में बच्चों की हाजरी लेना शुरू कर दिया। शुरू में बच्चों के लिए मेरे द्वारा हाजरी लेना अनोखी बात थी क्योंकि इस स्कूल में कक्षा-अध्यापक के अतिरिक्त कोई अन्य अध्यापक हाजरी नहीं लेता था। कुछ बच्चों ने मुझसे पूछा भी, "कोई और टीचर तो हाजरी नहीं लेता, आप क्यों लेते हो?" मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से बता दिया, "मैं इसलिए हाजरी लेता हूँ कि मुझे पता रहे कि कौन मेरे पीरियड में बैठता है और कौन भाग जाता है।" मैंने यह भी समझाया कि "जो बच्चे रोज़ पीरियड में बैठते हैं, उनको कई तरह से इसका फ़ायदा होता है। जो बच्चे कक्षा में बैठे ही नहीं, वे परीक्षा में प्रश्न-पत्र को बस ताकते रहते हैं क्योंकि उन्हें किसी सवाल के बारे में कुछ पता ही नहीं होता। फिर वे किसी बच्चे

से प्रार्थना करते हैं, यार, इसका क्या आंसर है, बता दे ना।" मैंने विस्तार से इस बारे में अभिनय करके बताया। मैं उनकी मन:स्थिति का बिलकुल सटीक चित्रण कर रहा था इसलिए मेरी बातें उनके दिलों में गहराई तक उतर रही थीं। वे समझ गए कि कक्षा में उपस्थित रहना उनके लिए बेहतर रहेगा।

बच्चों के लिए भी मेरा हाजरी लेना महत्वपूर्ण था। जिन बच्चों को कक्षा में उपस्थित रहने की आदत थी, उनके लिए मेरा हाजरी लेना उनकी अच्छी आदत के प्रकटीकरण का माध्यम बन गया। जिस दिन मैं रजिस्टर भूल जाता या किसी कारण प्रारंभ में हाजरी न लेता, वे मुझे याद दिलाते कि मैंने हाजरी नहीं ली है। जिन बच्चों को कक्षा से भागने की आदत थी, वे अब मुझे अपनी कक्षा में आते हुए देखते ही कक्षा की ओर दौड़ लगा देते। कई बार वे देर से पहुँचते तो पीरियड के अंत में मुझे याद दिलाते कि उनकी हाजरी नहीं लगी है। कई कक्षाएँ ऐसी थीं जिनके पूरे दिन में सिर्फ़ 2 पीरियड ही लगते, एक उनके कक्षा-अध्यापक का और दूसरा मेरा। इसलिए कई बच्चे मुझसे पूछते, "सर, क्या आज आपका

अध्यापक की डायरी से

30 अगस्त

मैंने बच्चों से ऐसे प्रश्न लिखने के लिए कहा जो उनके मन में उठते हैं लेकिन उनके उत्तर उन्हें कभी नहीं मिले। मैंने स्पष्ट कर दिया कि मैं पाठ्यक्रम के प्रश्नों की बात नहीं कर रहा हूँ बल्कि ज़िंदगी और लोगों की बात कर रहा हूँ। सबने बहुत अच्छे प्रश्न लिखे। अब मैं उनके उत्तर भी दूँगा।

मैंने कक्षा में कई चित्र आदि लगा दिए हैं। बच्चों से भी चित्र बनवाए हैं। कक्षा सुंदर लग रही है।

एक कोने में 'स्टूडेंट ऑफ़ द वीक' शीर्षक लगाया और बच्चों से कहा कि जो बच्चे रोज़ आएँगे, पूरे समय स्कूल में रहेंगे और वर्दी में रहेंगे, उनके नाम इस जगह लगाए जाएँगे। आज 4 बच्चे इन कठिन कसौटियों पर खरे पाए गए और उनके नाम वहाँ लगाए गए। सब बहुत खुश और उत्साहित थे।

मैंने उन्हें एक कविता देकर उसके बारे में चित्र बनाने का काम दिया है।

बच्चों को गुरुत्सव के बारे में बताया लेकिन आज ही उसका पंजीकरण समाप्त हो रहा है। मुझे निराशा हुई कि मेरे बच्चे इसमें हिस्सा नहीं ले सकेंगे।

धीरज को मैंने 'स्टूडेंट ऑफ़ द वीक' के लिए निगरानी का काम सौंपा हुआ है। उसने बताया कि कुछ बच्चे बिना कारण कक्षा से बाहर जाते हैं। मैंने इसका उपाय सोच लिया है. सोमवार से कक्षा में एक कक्षा-पास दे दूँगा जिसपर कक्षा का नाम लिखा होगा। अगर किसी बच्चे को कक्षा से बाहर जाना है तो उसे पहनकर ही बाहर जाएगा। इस तरह एक साथ बाहर निकलने पर रोक लग सकेगी। वैसे मेरी कक्षा के बच्चे मटरगश्ती कम ही करते हैं। कल जब मैंने बच्चों को कहा कि मैदान में जाकर खेल लो तो उन्होंने इनकार कर दिया। एक ने बताया- सर, फिर ग्राउंड में जाने की आदत पड़ जाएगी। हम यहीं खेल लेते हैं।

मुझे उनके उत्तर से ख़ुशी भी हुई और हैरानी भी। मैंने दो बजे उनकी छुट्टी कर दी। बच्चे इतने अच्छे भी नहीं होने चाहिए।

पीरियड लगेगा?" इस प्रश्न का उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट होता था। इस सवाल में यह भाव छिपा होता था कि, "आपका पीरियड लगेगा तो हम रुकें अन्यथा जाएँ.." मैंने हाजरी लेना तो शुरू कर दिया लेकिन अभी मैं रोल नंबर द्वारा ही हाजरी ले रहा था क्योंकि मुझे प्रत्येक कक्षा के बच्चों के नाम पता नहीं थे।

मैं इस स्कूल में नया था इसलिए मैं न तो सभी अध्यापकों को जानता था, न पहचानता था। इसके अतिरिक्त इतने बड़े स्कूल में किसी को खोजना भी टेढ़ा काम था। इसलिए मैंने स्कूल के कंप्यूटर ऑपरेटर से उन कक्षाओं के बच्चों के नाम की सूची माँगी जिनमें मेरा पीरियड होता था। लेकिन उसने भी कभी समय और कभी कागज़ों की कमी का रोना मेरे सामने रखना शुरू कर दिया। कुछ दिनों तक प्रयास करने के बाद मैंने एक पुराने शिक्षक से सीख लिया कि इंटरनेट द्वारा किसी भी कक्षा के बच्चों की सूची कैसे प्राप्त की जा सकती है। इसके बाद मैं उसी दिन अपने घर पर अपना वह रजिस्टर ले गया और सभी बच्चों के नाम उसमें लिख लिए। अब मैं नाम बोलकर हाजरी लेने लगा। इसका फ़ायदा मुझे यह भी हुआ कि मुझे बच्चों के नाम याद होने लगे और मुझे पता रहने लगा कि कौन-कौन से बच्चे कब-कब कक्षा से अनुपस्थित रहे।

मुझे हाजरी लेने में मुश्किल से 2-3 मिनट लगते थे लेकिन इन 2-3 मिनटों का फ़ायदा बहुत अधिक था। जिस-जिस कक्षा में मेरा पीरियड था, उनमें बच्चों की हाजरी अविश्वसनीय रूप से सुधरने लगी थी। मेरा विशवास था कि एक बार जब बच्चे मेरी कक्षा में बैठकर पढ़ने का अनुभव लेंगे तो फिर अपने-आप कक्षा से भागना बंद कर देंगे क्योंकि उनके भागने का एक कारण यह भी था कि उन्हें कोई पढ़ाने वाला नहीं था। दूसरे, पढ़ाने का तरीका भी बच्चों को कक्षा में बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन अब भी कुछ लड़के ऐसे थे जो आज तक एक बार भी मेरी या किसी भी कक्षा में कभी नज़र तक नहीं आए थे। अगर कोई लड़का कभी कक्षा में आया ही नहीं तो उसे कैसे प्रेरित किया जाए या कैसे पढ़ाया जाए।

मैंने गौर किया कि ऐसे लड़के उन कक्षाओं में अधिक थे जिनमें मेरा पीरियड अर्ध-अवकाश के बाद और छुट्टी होने से ठीक पहले होता था। इस विद्यालय जैसे अधिकतर सरकारी विद्यालयों में अंतिम पीरियड आते-आते कक्षाएँ लगभग खाली हो जाती हैं। यह एक आम चलन है। जिस सरकारी विद्यालय में आज से 25 वर्ष पहले मैंने पढ़ाई-लिखाई की थी, उसका उस समय भी ऐसा ही हाल था। लेकिन कोई समस्या बहुत पुरानी है या बहुत बड़ी है, इसका अर्थ यह तो नहीं कि हम उसे नज़रअंदाज़ कर दें। मैंने सोच-विचार किया कि ऐसा क्या कार्य किया जा सकता है कि बच्चे अंतिम पीरियड में भी भागना बंद कर दें। इसके लिए मैंने उन कक्षाओं के कक्षा-अध्यापकों से बात की। मैंने उन्हें समस्या तो बताई ही (जिससे वे पहले से परिचित थे) बल्कि समस्या का संभावित हल भी सुझाया। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे अपनी कक्षा के रजिस्टर मुझे दे दें और मैं ही उनकी कक्षा की हाजरी ले लिया करूँगा। जब बच्चों को पता चलेगा कि उनकी हाजरी अंतिम पीरियड में भी लग रही है तो वे अंतिम पीरियड तक रुकने भी लगेंगे।

जिस कक्षा में मेरा पीरियड छुट्टी के समय होता था, उस कक्षा के अध्यापक ने सहर्ष मुझे अपना रजिस्टर दे दिया। इसका तुरंत असर हुआ, उनकी कक्षा के लड़के पूरे समय स्कूल में रुकने लगे। जिन लड़कों को किसी काम से विद्यालय से जाना भी होता, वे या तो मुझसे पूछकर जाते या काम निपटाकर जल्दी-से वापस आ जाते।

जिस कक्षा में मेरा पीरियड अर्ध-अवकाश के तुरंत बाद होता था, उस कक्षा के अध्यापक ने मुझे अपना रजिस्टर नहीं दिया बल्कि बच्चों को सुधारने के लिए परंपरागत तरीके यानी डंडे का सहारा लिया। उनकी इस निराशाजनक पद्धति का बच्चों के व्यवहार और उपस्थिति पर एक प्रतिशत भी असर नहीं हुआ।

वातावरण निर्माण

खैर, अब जबकि लड़के कक्षा में आने लगे थे, तो मेरा अगला कार्य यह था कि मैं उन्हें यह अहसास करवाऊँ कि मेरी कक्षा में पढ़ाई होती है और रोचक तरीकों से होती है। अगर बच्चे कक्षा में बैठे हों और सिर्फ़ बैठे ही रहें या ऊबते रहें तो इससे अच्छा है कि वे अपने घर पर ही चले जाएँ। मैं परंपरागत तरीके 'तू पढ़ विधि' से तो कभी पढ़ाता ही नहीं था, मैं प्रत्येक पाठ को उनके जीवन से जोड़कर और हँसी-खुशी से पढ़ाता था। बीच-बीच में गतिविधियाँ भी करवाता रहता। मैं उनकी कमियों को सीधे-सीधे टोकने से बचता और इस तरह समझाता कि उन्हें भी यह पता चले कि मुझे उनकी चिंता है, मुझे उनसे प्यार है और मैं उनका हितैषी हूँ। इन सब बातों का उन पर जादू का सा असर हुआ।

मुझे यह अहसास था कि कक्षा के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक वातावरण को उसका भौतिक परिवेश बहुत अधिक प्रभावित करता है। इसलिए मैंने कक्षा की सफ़ाई के लिए बच्चों को प्रेरित किया। खुद भी हाथ में झाड़ू लेकर जाले साफ़ किए। इससे बच्चों में यह संदेश गया कि सफ़ाई ज़रूरी है और सफ़ाई करना या इसे बनाए रखना कोई छोटा काम नहीं बल्कि महत्वपूर्ण कार्य है। मेरे सुझाव से बच्चों ने खुद ही बारी-बारी से सफ़ाई की निगरानी का ज़िम्मा ले लिया। मैंने कक्षा की सूनी और नीरस दीवारों पर रोचक और आकर्षक चित्र आदि लगा दिए। साथ ही बच्चों को भी प्रेरित किया कि वे कक्षा को सुंदर बनाने में योगदान दें। अगले ही दिन बच्चे तरह-तरह की कलाकृतियाँ बनाकर ले आए। मैंने उनकी मेहनत और कृतियों की प्रशंसा की और बच्चों ने उन्हें सुरुचिपूर्ण तरीके से प्रदर्शित कर दिया।

एक तरफ़ कक्षा के भौतिक वातावरण को सुधारने की प्रक्रिया जारी थी तो दूसरी ओर उसके शैक्षिक वातावरण को बदलने का कार्य चल रहा था। मैं कक्षा में गोंद की एक बोतल ले आया और उसे बच्चों को सौंप दिया। मैंने कहा, "अगर कभी तुम्हारी कोई किताब या कॉपी फ़ट जाए तो उसे तुरंत चिपका लेना वरना वह और ज़्यादा फ़टती जाएगी." जैसा मैंने सोचा था, वैसा ही हुआ। मैंने देखा कि बच्चे अब अपने आप अपनी कॉपी-किताबों को संभालकर रखने लगे हैं। अगर मैं सिर्फ़ आदेश देता या उपदेश देता तो शायद इतना असर न होता।

कभी-कभी बच्चे आपस में उलझ भी जाते थे जैसा कि हर कक्षा में होता है। ऐसे अवसरों पर मैं

दोनों पक्षों को डाँटने के बजाए उन्हें समझाया करता और कोशिश करता कि वे आपस में सुलह कर लें। मैं कहता, "हम मिलकर रहेंगे तो कोई हमें नुकसान नहीं पहुँचा सकता।" मैं जानबूझकर **'हम'** शब्द का प्रयोग करता। इन छोटे-छोटे प्रतीकों का असर बहुत बड़ा होता है।

मेरे पास कुछ पुरानी डायरियाँ रखी हुई थीं। मैं उन्हें अपनी कक्षा में ले आया और हर बच्चे को एक-एक डायरी दे दी। बच्चे उत्सुक थे कि उन डायरियों का क्या करना है। मैंने कहा, "इन डायरियों में आप जब मन करे, अपने दिल की बातें लिख सकते हो। अगर मन करे तो रोज़ भी लिख सकते हो।" अभी भी कुछ बच्चों को समझ में नहीं आ रहा था इसलिए उन्होंने फिर पुछा कि क्या लिखना है। मैंने फिर बताया, "कई बातें ऐसी होती हैं जो हम किसी से कह नहीं पाते। कुछ अच्छा लगा या कुछ बुरा लगा, कहीं

अध्यापक की डायरी से

23 सितंबर

मैंने पेपर करवाया तो पाया कि सब काफ़ी अच्छी तरह उत्तर दे रहे हैं। इतनी बार पढ़ाने और पढ़वाने का फ़ायदा हुआ। मैंने गर्व से तारीफ़ की। तरुण बोला, "आज आधा लीटर खून बढ़ गया।" मैं सुबह से देख रहा था कि उसका मन पढ़ने में नहीं है। मैंने थोड़ी देर पहले ही उसे टोका था। "बेटा, सुबह से तेरा ध्यान पढ़ाई में नहीं है।" उसने तपाक से जवाब देते हुए कहा, "सर, मैं इंग्लिश का काम कर रहा था"

मैंने बड़ी विनम्रता से समझाते हुए कहा, "अगर मैं पढ़ा रहा हूँ और तू कोई और काम कर रहा है तो इसका मतलब तेरे दिल में मेरी कोई इज्ज़त नहीं है।"

उसने सकुचाते हुए कहा, "ऐसी बात नहीं है सर.. मैं तो जितना भी अच्छा काम कर लूँ। आप मेरी तारीफ़ कभी नहीं करते।"

यह सच नहीं था। मैंने स्पष्ट भाव से कहा, " बेटा, तू खुद अपने किए-कराए पर पानी फ़ेर देता है।" वह सहमत था। आज मैंने मनीष से पूछा कि कल उसने मुझे खतरनाक टीचर क्यों कहा था। उसने बताया, "सर, आप मारते नहीं मगर ऐसी बात कह देते हो जो दिल को चुभ जाती है।" दरअसल वह उन बातों का ज़िक्र कर रहा था जो मैं प्यार से समझाते हुए या ऐसे ही बातों-बातों में कोई टिप्पणी कर देता हूँ। यह बात मैं पहले भी कई बच्चों से सुन चुका हूँ। धीरज बोला, "सर, हाथ की मार तो उसी समय गायब हो जाती है, लेकिन आप जो बोलते हो, उसका असर दिल पर लंबे समय तक रहता है।"

तरुण फिर बोला, "आप चढ़ा भी जल्दी देते हो, उतार भी जल्दी देते हो।" मैंने कहा, "मैं तारीफ़ भी दिल से करता हूँ, कमियाँ भी दिल से बताता हूँ.." फिर मैंने समझाया, "तुम्हें मेरी बात इसलिए चुभती है क्योंकि तुम मुझसे प्यार करते हो, मेरी बात की परवाह करते हो। इसलिए कोशिश करते हो कि मुझे कोई बात बुरी न लगे। वरना इस स्कूल में इतने टीचर हैं... तुम मेरी राय की इसलिए परवाह करते हो क्योंकि तुम जानते हो कि मैं भी तुम्हारी परवाह करता हूँ।" सब गहराई से इस बात को महसूस कर रहे थे। वैसे भी, आज खुद उन्हें लग रहा होगा कि वे टेस्ट के प्रश्नों के उत्तर जानते हैं। यह उनकी पढ़ाई का ही परिणाम है। इससे खुशी तो होती ही है। आज उस बच्चे के पिता को बुलाया जो कल बिना बताए भाग गया था। उन्होंने बताया कि उसके हाथ में दर्द रहता है।

गए, कुछ खाया..जो चाहे लिख सकते हो। जो भी तुम लिखोगे, वह तुम्हारी ख़ुशी के लिए होगा। तुम्हें किसी को दिखाना नहीं है।"

अब बच्चों की समझ में आ गया। मेरा उद्देश्य यह था कि वे अपनी भावनाओं को खुद समझें और उनका सामना करें। जब हम अपने विचारों को लिखते हैं तो वे मूर्त रूप में हमारे सामने होते हैं। इससे हमें खुद को और अपने आसपास के लोगों को समझने में मदद मिलती है। मेरा प्रयास सफ़ल रहा क्योंकि कई बच्चों ने नियमित रूप से डायरी लिखना शुरू ही नहीं किया बल्कि लंबे समय तक जारी रखा। बच्चों के दिलों में एक दूसरे के लिए और पूरी कक्षा के लिए अपनापन और प्यार जगाने के लिए मैंने एक और पहल की। मेरे पास प्रत्येक बच्चे के जन्मदिन की सूची थी, मैंने निश्चय किया कि मैं हर बच्चे के जन्मदिन पर उसके लिए बधाई कार्ड लाऊँगा और अपने हाथ से उस पर शुभकामना संदेश लिखुँगा।

पहले तो मैंने सोचा था कि कक्षा के बच्चे अपने हाथ से एक-दूसरे के लिए बधाई-कार्ड बनाएँ लेकिन इससे सरप्राइज़ खत्म हो जाता। मुझे आज भी याद है जब मैंने पहली बार इस कक्षा में एक बच्चे को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दी थीं, तब मैंने पूरी कक्षा से कहा, "आज एक बच्चे का जन्मदिन है। मैं उसके लिए एक बधाई-कार्ड लाया हूँ। हम सब उसपर अपने साइन करेंगे, अपना संदेश लिखेंगे और उस बच्चे को पूरी कक्षा की ओर से वह कार्ड देंगे।"

सब बच्चे ख़ुशी से एक-दूसरे के चेहरे देखने लगे और यह जानने की कोशिश करने लगे कि आज किसका जन्मदिन है। मैंने सबको बताया, "आज ज़ाकिर का जन्मदिन है।" सब बच्चों ने ताली बजाकर अपनी ख़ुशी प्रकट की। जाकिर हैरान था, वह अंत:प्रेरणा से उठा और आगे आकर मेरे पैर छुए। उसने चुपके से बताया, "सर, मुझे अपने जन्मदिन का पता ही नहीं था!"

मुझे ज़ाकिर की उस बात से अहसास हुआ कि बच्चों के लिए मेरी यह छोटी सी शुरुआत कितनी बड़ी और महत्वपूर्ण बात है। मैंने उसके सर पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद देते हुए सबसे कहा, "जब सब बच्चे कार्ड पर अपनी बात लिख चुकें तो ज़ाकिर को कार्ड दे दें।" उस दिन के बाद से मेरी कक्षा में यह परंपरा शुरू हो गई। इस परंपरा से हमारी कक्षा के अपनेपन में कितनी मज़बूती आई इस बात का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बच्चों ने न जाने कैसे अपने आप मेरा जन्मदिन पता कर लिया और उस दिन कक्षा में एक छोटी सी पार्टी तक का आयोजन कर डाला।

समयबद्धता

मैं समय-समय पर रोचक गतिविधियाँ करवाता, बच्चों के साथ मिलकर हँसता-हँसाता और पूरी ईमानदारी से पढ़ाता। इस सबका असर बच्चों के व्यवहार पर अप्रत्यक्ष रूप से असर डालने लगा। मैं चूँकि समय पर स्कूल जाता था और समय पर स्कूल से निकलता था इसलिए जब मैं बच्चों को समय के पालन की अहमियत के बारे में बताता था तो उन्हें मेरी बातें खोखली नहीं लगती थीं।

अधिकतर बच्चे समय पर स्कूल आने लगे थे लेकिन एक लड़का मेरे बार-बार समझाने पर भी

अध्यापक की डायरी से

21 नवंबर,

अब मेरे पास सिर्फ़ नवीं और दसवीं के 4 सेक्शन हैं। मतलब मैं तसल्ली से कॉपी चेक कर सकता हूँ। मैंने उन्हें खुद उत्तर बनाकर लिखने को कहा है इस बार ताकि उन्हें खुद पर भरोसा जागे। वे ऐसा कर भी रहे हैं। मैं हर शब्द पढ़कर गलतियों पर गोले लगाता हूँ और उन्हें खुद ठीक करने को कहता हूँ ताकि अगली बार वे गलती न करें। साथ ही विस्तृत नोट लिखता हूँ जिसमें उनकी अच्छी और खराब, दोनों तरह की बातें होती हैं. बच्चों को ख़ुशी होती है और संतोष भी कि सर ने उनके काम को पढ़ा और सही प्रतिक्रिया दी।

पिछले दिनों कक्षा साफ़ करने की प्रतियोगिता हुई और सबसे अच्छी सफ़ाई करने वाली कक्षाओं को प्रथम, द्वितीय आदि स्थान दिए गए। कुछ शिक्षकों ने यह स्थान तय किए। मेरी कक्षा इस स्कूल की सबसे साफ़ और सुंदर कक्षा है। लेकिन उसे कोई स्थान नहीं दिया गया। जानबूझकर, लोग इसी तरह से अपनी खीझ निकालते हैं। मेरे बच्चे उदास थे और मैं दुखी। लेकिन खुद को संभाला और बच्चों को प्रेरित किया। मैंने समझाया कि ज़िंदगी में ऐसे और भी मौके आएँगे जब लोग धोखा देंगे। लेकिन लोगों के धोखों के कारण हमें सही काम और सही रास्ते को छोड़ना नहीं चाहिए। बच्चों ने कहा, ''सर, दूसरी कक्षाओं के बच्चे मज़ाक उड़ा रहे हैं।'' मैंने कहा ''हमें तो पता है न कि हमारी क्लास सबसे अच्छी है।''

उसी दिन नवीं बी के बच्चों ने पूछा, ''सर आपकी कक्षा को ईनाम नहीं मिला?''

मैंने कहा, ''क्योंकि मेरी कक्षा इस ईनाम से ऊपर है.''

बच्चों ने खुद कहा, ''हाँ सर, आपकी कक्षा सबसे साफ़ रहती है, बच्चे पढ़ते रहते हैं, कोई नहीं भागता।''

कई टीचर इन फ़ैसलों से खुश नहीं थे और बेईमानी की बुराई कर रहे थे. मैंने किसी से इस बारे में ज़िक्र नहीं किया। अगर करता तो शायद उन लोगों के दिलों को ठंडक मिलती।

बच्चे अभी भी रोज़ सफ़ाई करते हैं। जिन कक्षाओं को 1 से 5 तक के स्थान दिए गए, वे न तो उस दिन साफ़ थीं, न आज हैं।

नवीं बी के टीचर ज़्यादा ध्यान नहीं दे रहे इसलिए उनकी कक्षा के बहुत कम बच्चे होते हैं। मेरे माँगने पर भी उन्होंने रजिस्टर नहीं दिया। दसवीं बी के सर ने मुझे रजिस्टर दे दिया। उनकी कक्षा के बच्चे आखिरी पीरियड तक रुकने भी लगे हैं और पढ़ने भी लगे हैं। कल कई बच्चे पहली बार कक्षा में थे। मैं राम-लक्षमण परशुराम संवाद पाठ पढ़ा रहा था और उसे बच्चों की शरारतों और संवादों से जोड़ रहा था। बच्चों को मज़ा आ रहा था। एक ने दूसरे के कान में कहा, ''कल से मैं किताब ज़रूर लाऊँगा।''

मैंने गुरु की महिमा बताते हुए दोहा सुनाया और बातों-बातों में मज़ाक में कहा, ''जो बच्चे पढ़ने में रूचि रखते हैं, वे मुझे देखकर खुश होते हैं, जो नहीं पढ़ना चाहते, वे देखते ही सोचते हैं - लो, फिर आ गया!'' दोनों उनके मन की बातें थीं। वे मुसकरा उठे।

आज मैंने कभी कक्षा में न आने वाले बच्चों के बारे में कहा, ''अगर मैं तुम्हारी कक्षा का टीचर होता तो अब तक तो सबको सीधा कर देता।''

एक लड़का बोला, ''सर, काश आप ही हमारे टीचर होते।''

दूसरे ने कहा, ''सर, ग्यारहवीं में आप ही हमारे क्लास टीचर बन जाना।''

प्रार्थना खत्म होने के समय पर आ पाता था। मैंने प्यार से उससे देरी का कारण पूछा, तो उसका उत्तर था कि, "सर, सुबह आँख नहीं खुलती" उसने सच-सच बता दिया। मैं समझ गया कि इसे घर पर पलकों पर उठाकर रखा जाता होगा। मैंने फिर समझाया और उसने वायदा किया कि अब से वह समय पर आएगा। एक-दो दिन उसने अपना वायदा निभाया भी। लेकिन कुछ दिनों के बाद वह फिर से पुराने ढर्रे पर लौट आया। उन्हीं दिनों उसकी माँ वज़ीफ़े के पैसे लेने आईं। मैंने इसे एक अच्छा अवसर बनाते हुए उनसे विस्तार से बात की लेकिन मेरा तरीका दोषारोपण का या शिकायत करने का नहीं था बल्कि मैं एक अभिभावक के रूप में अपनी चिंता जता रहा था। चूँकि मेरी भावनाओं और इरादों में सच्चाई थी इसलिए उस लड़के की आँखों में आँसू आ गए। उसकी माँ ने वायदा किया कि आगे से वह समय पर आएगा।

कुछ दिनों के बाद बच्चों को विद्यालय की ओर से डायरी दे दी गईं। ये डायरियाँ गृहकार्य आदि नोट करने के लिए थीं। मैंने इनका एक और उपयोग करने का फ़ैसला किया। मैंने प्रत्येक बच्चे की डायरी में कुछ पृष्ठ अवकाश की सूचना के लिए निर्धारित कर दिए। मैंने हर बच्चे की डायरी पर उसके द्वारा अब तक लिए गए अवकाशों की सूची (तिथि) लिख दी और बच्चों से कहा कि वे प्रत्येक तिथि के सामने अपने पिता या माँ से हस्ताक्षर करवा कर लाएँ। मैंने स्पष्ट कर दिया कि इसके द्वारा मैं यह जानना चाहता हूँ कि उनके अभिभावकों को उनके अवकाशों की जानकारी है या नहीं। मैंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि भविष्य में भी यदि कोई बच्चा अवकाश लेता है तो उसे अवकाश लेने से पहले या बाद में डायरी में अपने अभिभावकों से लिखवाकर लाना होगा कि अवकाश क्यों लिया गया।

हालाँकि स्कूलों में अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र का चलन है लेकिन मेरा यह अनुभव है कि लगभग सभी बच्चे जब चाहे छुट्टी कर लेते हैं और कई बार उनके माता पिता को यह पता ही नहीं होता कि उनका बच्चा स्कूल नहीं आया है। इक्का-दुक्का बच्चा ही छुट्टी के लिए प्रार्थनापत्र देता है और अगर अध्यापक प्रार्थना-पत्र के लिए ज़ोर देते हैं तो बच्चे कॉपी के कागज़ पर खुद पत्र लिखकर और खुद हस्ताक्षर करके खानापूर्ति कर देते हैं।

डायरी में अवकाशों की सूची का लाभ यह हुआ कि बच्चे और उनके अभिभावक को साफ़-साफ़ नज़र आने लगा कि कितनी अधिक या कम छुट्टियाँ ली जा रही हैं। मैं डायरी का उपयोग सिर्फ़ छुट्टियों की जानकारी के लिए ही नहीं करता था। मैं बच्चे के प्रदर्शन या व्यवहार के बारे में भी समय-समय पर गुणात्मक टिप्पणियाँ डायरी में लिख देता और बच्चों को कहता कि उस टिप्पणी को अपने अभिभावक को दिखाकर उसके साथ भी हस्ताक्षर करवाकर लाएँ। लेकिन इस सबका पूरा फ़ायदा तब ही संभव था जब मैं उनकी डायरियों की जाँच भी करता। आमतौर पर होता यही है कि हम कोई अच्छा कार्य शुरू तो जोश के साथ करते हैं लेकिन उसकी निगरानी करने में आलस कर जाते हैं।

मैंने प्रयास किया कि मैं इस कमी को अपनी कक्षा में न आने दूँ। मैं नियमित रूप से प्रत्येक बच्चे की डायरी की जाँच करता और बच्चे से बात भी

करता कि उसने छुट्टी क्यों ली और क्या उससे बचा जा सकता था। अब सवाल यह उठता है कि क्या गारंटी है कि बच्चे डायरी में अपने पिता या माँ से ही हस्ताक्षर करवाकर लाएँगे। इस शंका का भी जवाब है। मेरा मानना है कि लगभग सभी बच्चे जान लेते हैं कि उनके अध्यापक सच के रास्ते पर चल रहे हैं

अध्यापक की डायरी से

30 नवंबर,

मैंने हर बच्चे की डायरी में पहले से ही सबके नंबर लिखवा और छुट्टियाँ लिखवाकर साइन करवा लिए थे। बच्चों को बता भी दिया था कि मैं ये डायरी उनके पिता को दिखाऊँगा। सब हँसकर बोले थे, "शनिवार भारी पड़ेगा।"

मैंने जानबूझकर 'लास्ट वर्किंग डे' के दिन 11 बजे के बाद पैसे बाँटे ताकि माँ-बाप से तसल्ली से बातें भी कर सकूँ, बिना उस हंगामे के व्यवधानों के जो इस स्कूल के लड़के हर वक़्त करते रहते हैं, उनके लिए कुर्सी का इंतज़ाम किया। सब तसल्ली से अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे। आए तो वे पैसा लेने थे लेकिन यह समय बर्बाद नहीं हुआ। मैंने हर बच्चे के अभिभावक को उनके बच्चे की अच्छी बातें और कमियाँ बताईं। मैंने देखा कि सिर्फ़ 3 लड़कों की हाजरी 75 % से थोड़ी कम है। मैंने उनके पिता को समझाया। सब खुश थे। जिनके बच्चे फ़ेल थे, उन्होंने बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान देने का वायदा किया। मैंने बच्चों के बालों , व्यवहार, पढ़ाई, वर्दी, हर मामले के बारे में उनसे बात की।

बच्चों की कॉपी जाँचने में काफ़ी समय लग रहा है। बार-बार कहने के बावजूद वे नक़ल कर रहे हैं। मैंने एक गतिविधि करवाई थी जिसमे बच्चों को अपने मन से कुछ लिखना था। एक बच्चे ने अपनी कॉपी में लिखा था कि धीरज टीचरों के सामने अच्छा बनता है, पीछे उनकी बुराई करवाता है। धीरज ने जब यह लिखा देखा तो उसने अपना नाम कटवाकर उसकी जगह किसी और बच्चे का नाम लिखवा दिया। जब वह लड़का कॉपी चेक करवाने आया तो मैंने धीरज का नाम कटा हुआ देखा, मैं सब समझ गया। मैंने इस बारे में उस लड़के से जब बात की तो धीरज ध्यान से देख रहा था। जब मैंने उसे कॉपी चेक करवाने के लिए बुलाया तो उसने सफ़ाई देने की कोशिश की। मैंने इस बारे में कोई बात नहीं की और कुछ और पूछा, "दिमाग ठिकाने पर है या भटक रहा है?" दरअसल फ़ेसबुक पर उसने खुद को 'रिलेशनशिप' में घोषित किया है। मेरा प्रश्न इसी 'संबंध' के बारे में था। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

घर आया तो उसने फ़ेसबुक पर फिर सफ़ाई दी। मैंने कहा, "चिंता मत करो।" "अच्छे इनसान बनो।"

अगले दिन मैंने उसके व्यवहार में बदलाव देखा। उसने खुद कमरे की सफ़ाई की। मैं फ़ेसबुक की बातों का ज़िक्र कभी कक्षा में नहीं करता।

राजनिवास से टीम आई स्कूल की सफ़ाई देखने और फ़ोटो खींच ले गई। हमेशा की तरह सबसे साफ़ मेरी कक्षा थी। लेकिन शायद उसे मेरी कक्षा नहीं, लैब माना जाता है। बच्चों ने बताया कि वे लोग लैब को देखकर मुस्करा रहे थे। उसी दिन मैंने जाली में अटकी पन्नी की ओर बच्चों का ध्यान दिलवाया था और मनीष ने उसे हटाया था। मैंने बच्चों को इस बारे में भी बताया कि हमें किसी बात को मामूली नहीं समझना चाहिए। अगर वह पन्नी नहीं हटती तो वह फ़ोटो में भी नज़र आती।

खैर, वे सोमवार को फिर आने को कहकर गए। हर टीचर के नाम ऑर्डर निकल गया कि अपने कमरे और उसके बाहर की सफ़ाई उसकी ज़िम्मेवारी है। फिर सफ़ाई अभियान चला। मेरी कक्षा सबसे निश्चिंत थी क्योंकि वहाँ अभियान की ज़रुरत ही नहीं थी।

या नहीं, अगर शिक्षक सही है तो उसे धोखा देने की कोशिश बच्चे मुश्किल से ही करेंगे। फिर भी, एक-दो बच्चों के मन में कभी-कभी दुर्बलता आ सकती है। इसके लिए आपको भी सतर्क रहना होगा।

जब बच्चों के अभिभावक सरकार द्वारा बाँटे जाने वाले रुपए लेने के लिए आए तो मैंने इस मौके का उपयोग सिर्फ़ रुपए बाँटने के लिए ही नहीं बल्कि उनके साथ बातचीत करने के लिए किया। प्रत्येक अभिभावक को मैंने इज्ज़त से बिठाया और उनके बच्चे को भी उनके पास बुलाया। मैंने उन्हें उनके बच्चे की प्रगति की जानकारी दी। मैंने प्रत्येक बच्चे की डायरी में समय-समय पर मेरे द्वारा लिखी गई टिप्पणियों को दिखाया और अवकाशों की सूची को भी दिखाया। मैंने बातों-बातों में जान लिया कि किए गए हस्ताक्षर उनके ही हैं या नहीं। इससे उनके मन में मेरे प्रति विश्वास जागा और उनके बच्चे को भी यह संदेश पहुँचा कि उन्होंने ईमानदारी से हस्ताक्षर करवाकर बहुत सही कार्य किया वरना आज उनके अभिभावक को शर्मिंदा होना पड़ता।

एक बार मैंने एक बच्चे की डायरी में तीन तरह के हस्ताक्षर पहचान लिए। मैंने शांति से, बिना ऊँची आवाज़ किए उस बच्चे से पूछा, "ये साइन किसने किए हैं?" हालाँकि मेरी कक्षा के बच्चों को अब तक यह पता चल चुका था कि मेरे सामने झूठ बोलने का कोई लाभ नहीं होता लेकिन ऐसे मौकों पर लोग आमतौर पर पहला सहारा झूठ का ही लेते हैं। पहले तो उसने भी झूठ बोलने की कोशिश की लेकिन जब मैंने फिर से पूछा, "ये साइन किसने किए हैं?" तो वह फिर से झूठ नहीं बोल सका और उसने स्वीकार कर लिया कि पहले साइन उसके पिता के हैं और बाद वाले उसने खुद किए हैं। मैंने निराशा जताई और उसकी डायरी पर यह पूरा वाकया लिख दिया। मैंने कहा, "इस पर अपने पिता से साइन करवाकर लाना ताकि उन्हें भी पता चले कि तुमने मुझे धोखा देने की कोशिश की है।" इस घटना के बाद कक्षा के किसी बच्चे ने ऐसी हरकत नहीं की। मैंने गौर किया कि कक्षा के कुछ बच्चे इंटरनेट का उपयोग कर लेते हैं और कुछ बच्चों ने फ़ेसबुक पर भी अपनी मौजूदगी के बारे में बताया। कुछ बच्चों ने फ़ेसबुक पर मुझे मित्र भी बना लिया। इसका लाभ यह हुआ कि मैं उनके जीवन के एक अन्य पक्ष से परिचित हो सका।

कभी-कभी वे ऑनलाइन मुझे नमस्ते कहते और कक्षा की घटनाओं पर मुझसे बात करते। उदाहरण के लिए, एक बार एक लड़के ने एक दूसरे लड़के के बारे में कहा, "सर, वह टीचर के सामने तो अच्छा बनकर रहता है लेकिन जब टीचर नहीं होते तो खूब लड़ाई करता है." जिस लड़के के बारे में बात हो रही थी, उसने सुन लिया। मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, न उससे इस बारे में बात की। उसी दिन उसने ऑनलाइन मुझसे बात की और सफ़ाई दी। मैंने कहा, "चिंता मत करो। मैं सुनी-सुनाई बातों पर भरोसा नहीं करता। मुझे भरोसा है कि तुम एक अच्छे इनसान हो।" अगले दिन से मैंने महसूस किया कि वह लड़का 'बड़ा' हो गया है। आज भी वह कक्षा के सबसे ज़िम्मेदार लड़कों में से एक है।

मुझे लगता है कि ऑनलाइन फोरम बच्चों को आपके साथ वैयक्तिक रूप से जुड़ने का मौक़ा देते हैं और उस समय आपके द्वारा कही गई बात का गहरा असर होता है।

ऑनलाइन गतिविधियों का एक और तरीके से फ़ायदा हो सकता है। एक बार एक बच्चे ने अवकाश लिया। मैंने उसी दिन देखा कि उसने फ़ेसबुक पर अपनी नई तसवीर पोस्ट की है। अगले दिन जब वह कक्षा में आया तो मैंने पूछा, "बेटा, कल कहाँ थे आप?" उसने बहुत बड़ा झूठ बोला, "सर, मेरा चचेरा भाई एक्सपायर हो गया था। वहाँ गए थे।" मैंने अपना सवाल फिर दोहराया और उसने अपना झूठ फिर दोहरा दिया। मैंने अब उसके बजाए पूरी कक्षा को संबोधित किया, "सब ने अनूप की बात सुन ली है न? कल इसके भाई की मृत्यु हो गई थी इसलिए यह स्कूल में नहीं आ सका। इसे कल इतना दु:ख हो रहा था कि उस दु:ख को भुलाने के लिए ये फ़ेसबुक पर अपनी तस्वीरें पोस्ट कर रहा था।" उस लड़के पर तो मानों 'घड़ों पानी पड़ गया।' मैंने न तो उसे डाँटा, न कुछ और कहा लेकिन इस घटना से उसे ही नहीं पूरी कक्षा को पता चल गया कि झूठ पकड़ा ही जाता है।

इन घटनाओं को पढ़कर आपको लग रहा होगा कि मेरी कक्षा में तो ऐसा होता ही रहता होगा। नहीं, पूरे वर्ष में केवल यही दो घटनाएँ थीं जब किसी बच्चे ने मेरा विश्वास तोड़ा, अन्यथा वे सदैव सच के रास्ते पर डटे रहे।

मैं प्रत्येक महीने के अंतिम दिन बच्चों को बताता कि किस बच्चे ने इस महीने कितनी छुट्टी ली। जिन बच्चों ने एक भी छुट्टी नहीं ली होती, मैं उनके लिए खुद भी ताली बजाता और बाक़ी बच्चों से भी बजवाता। उन बच्चों के चेहरे खिल उठते। धीरे-धीरे मेरी कक्षा की अनियमितता लगभग पूरी तरह समाप्त हो गई।

अध्यापक की डायरी से

2 सितंबर

सभी कक्षाओं में पढ़ाई जारी है। आज प्रश्नोत्तरी अच्छी तरह करवाई। सबको मज़ा आया।

बच्चों ने याद दिलाया कि आज डाँस करना है लेकिन जब मैंने सबको खड़ा किया डाँस के लिए तो कोई नहीं नाचा। मैंने सबको गाना गाने के लिए कहा, "आप भी गाओगे?"

"हाँ"

सबने गाया। अनूप ने सबसे अच्छा गाया। मनीषा मैडम आ गईं तो कुछ शर्माने लगे। मुझे भी उनके सामने गाना उचित नहीं लगा। लेकिन मैंने आज एक्स्ट्रा पीरियड में भी नहीं गाया, कल देखेंगे।

अब मैंने एक नयी पहल की योजना बनाई। मैं कक्षा में एक माउंट बोर्ड (बड़ा गत्ता) ले गया और बच्चों से कहकर एक उपयुक्त जगह पर उसे लगवा दिया। बच्चों से ही मैंने उसपर एक शीर्षक लगावाया, 'स्टूडेंट्स ऑफ़ द वीक' यानी 'सप्ताह के उल्लेखनीय विद्यार्थी'। बच्चे उत्सुक थे यह जानने के लिए कि यह क्या है. मैंने बच्चों को बताया, "यह एक ख़ास जगह है जिसपर उन बच्चों के नाम लगाए

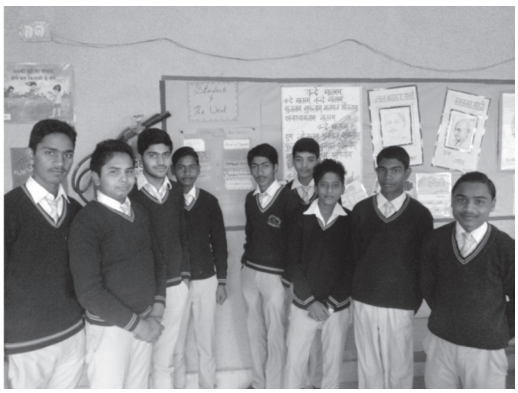

जाएँगे जो पूरे सप्ताह समय पर आएँगे, कोई अवकाश नहीं लेंगे, पूरी और साफ़-सुथरी वर्दी में रहेंगे और जिनका व्यवहार सबसे अच्छा रहेगा। यानी, वे बच्चे, जिनसे सब बच्चों को प्रेरणा मिल सकती है।"

मैंने स्पष्ट कर दिया, "तुम सब बहुत अच्छे हो लेकिन इस स्थान पर उन्हीं बच्चों के नाम आएँगे अपनी अच्छाई को कभी नहीं छोड़ते..एक पल के लिए भी नहीं।" इस पहल का उद्देश्य उन बच्चों को पहचान का सुख देना था 'जो बिना किसी दिखावे के हमेशा सही रास्ते पर चलते हैं, हमेशा नियमों का पालन करते हैं और इस स्कूल के इतने खराब माहौल में भी अपनी अच्छाई को कभी नहीं छोड़ते।' इसलिए बच्चे भी इस पहल से बहुत उत्साहित थे। इस कार्य के लिए मैंने बच्चों को ही उनके नामों की पट्टियाँ बनाने के लिए कह दिया। मैंने कहा, "सब बच्चे अपने-अपने नामों की पट्टी बनाकर एक जगह सँभालकर रख दो।"

शुरू में तो मैंने एक ज़िम्मेदार लड़के को ऐसे बच्चों की सूची बनाने के लिए कहा लेकिन जल्दी ही मुझे महसूस हुआ कि यह कार्य मुझे खुद करना चाहिए तभी सभी बच्चों का इसमें भरोसा कायम रहेगा। अब मैं पूरे सप्ताह प्रत्येक बच्चे पर नज़र रखता और सप्ताह के अंत में सर्वश्रेष्ठ नाम उस स्थान पर लगवा देता। सब बच्चे और मैं उन बच्चों के लिए ताली बजाते। कभी-कभी मैं उन बच्चों की फ़ोटो भी अपने मोबाइल से ले लेता। आपको हैरानी होगी यह जानकार कि बच्चे कितने उत्सुक रहते थे कि उनका नाम वहाँ पर आ जाए। कभी-कभी वे मुझसे पूछते, "सर, मैं तो रोज़ समय पर आया था, मेरा नाम नहीं आएगा?" तो मैं बताता कि उसका नाम किस कारण से नहीं आ सका।

धीरे-धीरे सत्र पूरा हो रहा था। वार्षिक परीक्षाएँ प्रारंभ होने वाली थीं। मैंने अपने रिकॉर्ड में से उन बच्चों के नाम निकाल लिए जो प्रत्येक सप्ताह 'स्टूडेंट ऑफ़ द वीक' बने रहे थे। मैंने उनके नामों की घोषणा की, बच्चे इतने खुश हुए कि अपने-आप तालियाँ बजाने लगे और उन बच्चों को अपने कंधों पर उठा लिया।